वीरांगना अहिल्याबाई धनगर होलकर

(31 मई 1725 : 13 अगस्त 1795)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

आभार : पुरुषोत्तम खेडेकर; विकिपीडिया
सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ,(उ.प्र.) – 31.05.2021
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए के सिंह
मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक, जय अहिल्याबाई...

.....

(होलकर यानी कि मराठा, यानी कि कुनबी, कुर्मी : यह समाज खेतीवाड़ी करने वाला समाज है, इनके पास ज्यादा भूमि होती है, और यह बड़े जमीदार होते हैं। और धनगर : यह समाज ज्यादातर भेड़, बकरियां पालने का काम, यानी कि जानवर पालने का काम करता है, और साथ में खेती-बाड़ी का भी काम करता है। यानी होलकर और धनगर दोनों, जीवी समाज, कमेरा समाज से हैं, मेहनतकश समाज से हैं। भारतीय संविधान के अनुसार दोनों अन्य पिछड़ा वर्ग यानी कि ओबीसी वर्ग के अंतर्गत आते हैं। अहिल्याबाई होल्कर ने भीलों की बहादुरी से प्रभावित होकर अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह भील समाज के युवक से किया था। अपने महापुरुषों की अंतर्जातीय विवाह की विचारधारा से सीखने की जरूरत है।)

महान शासक एवं मालवा प्रांत की महारानी अहिल्याबाई होल्कर की आज जयंती है। रानी अहिल्याबाई होल्कर का जन्म महाराष्ट्र के अहमदनगर शहर के चौड़ी नामक गांव में मनकोजी शिंदे के घर 31 मई 1725 ई में हुआ था। लोग उन्हें राजमाता अहिल्याबाई होल्कर नाम से भी जानते हैं। उनके पिता मानकोजी शिंदे खुद धनगर समाज से थे, जो गांव के पाटिल किरदार निभाते थे।

अहिल्याबाई में बचपन से दया और निष्ठा का भाव था। जब गांव में कोई महिला, शिक्षा का ख्याल भी मन में नहीं लाती थी, तब मनकोजी शिंदे ने अपनी बेटी को घर पर ही पढ़ाना-लिखाना शुरू किया। हालांकि, अहिल्याबाई किसी शाही वंश से नहीं थीं, पर प्रकृति को कुछ और ही मंजूर था। दरअसल पुणे जाते समय, उस वक़्त मालवा प्रदेश के राजा या फिर पेशवा कहें, मल्हार राव होलकर, चोंडी गांव में आराम के लिए ठहरे थे। तभी उनकी दृष्टि आठ वर्ष की अहिल्याबाई पर पड़ी, जो भूखों तथा निर्धनों को खाना खिला रही थी। इतनी कम आयु में उस लड़की की दया तथा निष्ठा को देख मल्हारराव होलकर ने अहिल्या का रिश्ता अपने बेटे खांडेराव होलकर के लिए मांगा।

इसप्रकार 8 वर्ष की आयु में ही, वर्ष 1733 में खांडेराव के साथ शादी होकर अहिल्याबाई, मराठा समुदाय के होल्कर राजघराने में पहुंची। मगर अहिल्याबाई के ऊपर संकट के बादल तब घिर आए जब वर्ष 1754 में कुंभेर के युद्ध के चलते उनके पति खांडेराव होलकर वीरगति को प्राप्त हुए। इस वक़्त अहिल्याबाई सिर्फ 21 वर्ष की थीं। अपने पति की मौत के पश्चात् जब अहिल्याबाई ने सती हो जाने का फैसला लिया, तो उनके ससुर मल्हार राव होलकर ने उन्हें रोक दिया। हर एक हालत में अहिल्या के ससुर उनके साथ खड़े रहे।

अहिल्याबाई हाथी की पीठ पर चढ़कर लड़ती थीं। वर्ष 1766 में जब उनके ससुर भी इस दुनिया को अलविदा कह गए, तो उनको अपना प्रदेश ताश के पत्तों के जैसा बिखरता दिखाई दे रहा था। ऐसे में अहिल्यादेवी पर जिम्मेदारी आ गई।

इंदौर(म.प्र.) के लोग अहिल्याबाई होल्कर को उनके बहादुरीपूर्ण ऐतिहासिक कार्यों की वजह से, आदर से उनके नाम के आगे मां या मातोश्री लगाते हैं, और इसीलिए इंदौर के लोगों की श्रद्धा और स्नेह है, जो लगभग 260 वर्ष बीत जाने के बाद भी नही बदला।

माता अहिल्याबाई ने न केवल महिला होकर न्यायप्रिय शासन किया, परन्तु प्रजा को अपनी संतान कि तरह रखा।

अपनी कर्तव्यनिष्ठा से उन्होंने सास-ससुर, पति व अन्य सम्बन्धियों के हृदयों को जीत लिया था। समय बीतने के साथ ही महारानी एक पुत्र मालेराव, एक पुत्री मुक्ताबाई की माँ बनीं।

अभी यौवनावस्था की दहलीज पर ही थीं, कि अचानक वज्रपात हो गया, महारानी की 29 वर्ष की आयु में ही पति का देहांत हो गया।

सन् 1766 ई. में वीरवर ससुर मल्हारराव भी चल बसे। अहिल्याबाई होल्कर के जीवन से एक महान् वरदहस्त उठ गया। और अनमने मन से शासन की बागडोर संभालनी पड़ी।

अहिल्याबाई होल्कर पर जब यह जिम्मेदारी आई वह तैयार थीं, लेकिन स्त्री होने के नाते उनकी राह आसान नहीं थी। चारों ओर से उन्हें विरोध की लौ में भी जलना पड़ा। लेकिन वह उसमें और अधिक मजबूत बनकर उभरी। 11 दिसंबर, 1767 को वे स्वयं इंदौर की शासक बन गईं। राज्य में एक तबका था, जो उनके विरोध में था। लेकिन होलकर सेना हमेशा उनके समर्थन में रही। वहीं रानी भी हर लड़ाई में अपनी सेना के साथ ही खड़ी रहीं। अपनी सेना का नेतृत्व किया, उनका हौंसला बढ़ाया। अपने पंसदीदा हाथी पर चढ़कर युद्ध में उतरी, तीर-कमान से अन्य सेनाओं पर हमला किया।

जब अहिल्याबाई के पति खांडेराव की हत्या करने वाले दुश्मनों का पता चला, तब उन्होंने घोषणा की, कि जो भी हमारे इन दुश्मनों से राज्य को निजात दिलाएगा, उसके साथ मैं अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह करूंगी। इस कार्य में उनकी सहायता सबसे ज्यादा भील समाज ने की। महारानी ने अपना वादा निभाते हुए अपनी बेटी मुक्ताबाई का विवाह भील समाज के युवक से कर दिया था।

यह महारानी की न्यायप्रियता ही थी, कि जब उनका पुत्र मालेराव कुसंगति में पड़कर बिगड़ गया और उसने एक कन्या के साथ दुराचार करने की कोशिश की, तो अहिल्याबाई ने बीच चौराहे पर हाथी के पैरो से कुचलवा कर अपने पुत्र मालेराव को मृत्यु दंड दे दिया था। इतने ईमानदार और न्यायप्रिय शासक देश में कम ही हुए हैं।

यानी कि देखते ही देखते पुत्र मालेराव, दोहित्र नत्थू, दामाद फणसे, पुत्री मुक्ता भी माँ को अकेला छोड़कर चल बसे। लेकिन महारानी अहिल्याबाई ने हार नहीं मानी।

प्रजाहित में उन्होंने स्वयं को संभाला, और सफल दायित्वपूर्ण राज-संचालन किया। उनका प्रशासनिक तंत्र अत्युत्तम था। वे स्वयं देर रात्रि तक दरबार में बैठकर राजकीय कार्यों को निपटाती थीं।

अधीनस्थ अधिकारियों के प्रति उनका व्यवहार अति नम्र था। कर्तव्यनिष्ठ कर्मियों को पुरष्कृत किया जाता था, तथा पदोन्नति भी की जाती थी।

चाहे अमीर हो या गरीब, सबको एक समान न्याय सुलभ था। उचित समय व अल्प खर्च पर न्याय दिलाने हेतु उन्होंने जगह-जगह न्यायालय स्थापित किए थे। किसी अन्य पर भरोसा ना कर, वे स्वयं अंतिम निर्णय करती थीं।

अर्थव्यवस्था सुदृढ़ थी। लगान वसूली की दृष्टि से उन्होंने अपने राज्य को तीन भागों में विभक्त किया था। कृषि व वाणिज्य को भी बढ़ावा दिया। वाणिज्य-व्यापार ने काफी उन्नति की थी। उन्होंने सूती वस्त्रों, विशेषकर महेश्वर के साड़ी उद्योग को काफी बढ़ावा दिया। जिसका सीधा लाभ राज्य की जनता को मिला।

सांस्कृतिक कार्यों को भी उन्होंने उदार संरक्षण दिया। कन्याकुमारी से हिमालय तक और द्वारिका से लेकर पुरी तक अनेकानेक घाट, तालाब, बावड़ियाँ, दान संस्थाएं, कुएं, भोजनालय, दानव्रत आदि खुलवाए। संपूर्ण भारतवर्ष मे मुख्य मार्गों पर धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

साहित्यिक क्षेत्र में कविवर मोरोपंत, खुशालीराम, अनंत फंदी उनके दरबारी रत्न थे। अनंत फंदी एक महान गायक भी थे, जो लावनियाँ गाने में अति निपुण थे।

उनके पास अपने राज्य की रक्षा हेतु एक अनुशासनबद्ध सेना भी थी। जिसके सेनापति महावीर तुकोजीराव होल्कर प्रथम के सफल नेतृत्व में था।

महारानी ने अपने सेनापतित्व में लगभग 500 महिलाओं की एक सैन्य टुकड़ी का भी गठन किया था। सेना में 'ज्वाला' नामक विशाल तोप भी शामिल थी। उनकी सेना एक फ्रांसीसी सेनाधिकारी दादुरनेक द्वारा यूरोपीय पद्धति पर प्रशिक्षित की गई थी।

महारानी ने अनावश्यक युद्ध कभी नहीं किए, लेकिन लेकिन गलत कार्य करने वालों को सजा जरूर दी, फिर वह कितना भी बड़ा प्रभावशाली व्यक्ति क्यों न रहा हो।

उनका कहना था कि “समस्त भारत की जनता एक है, हमारा राज्य बड़ा है और उनका छोटा। लेकिन हम महान् इसलिए हैं, क्योंकि हम किसी के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं करते हैं।”

अतः धन्य है ऐसा राष्ट्र प्रेम, क्योंकि उन्होंने विभिन्न राजदरबारों में अपने राजदूत भी रख छोड़े थे। उन्हें अपने जीवन में कुछ अनावश्यक युद्ध : यथा-राघोवा से सन् 1766-67 में, रामपुरा-मानपुरा के चन्द्रावत राजपूतों से मंदसौर का युद्ध 1771 में, अजमेर के निकट लखेरी का युद्ध 1773 को महादजी सिंधिया के सेनापति व उनकी सेना से करने पड़े, जिनमें महारानी विजयी रहीं।

महारानी अहिल्याबाई भारतीय संस्कृति की मूर्तिमान प्रतीक थीं। कितने आपत्ति के प्रसंग तथा कसौटियों के प्रसंग उस तेजस्विनी पर आए, लेकिन उन सबका बड़े धैर्य से मुकाबला करते हुए उन्होंने राज्य का संसार कैसे सुरक्षित रखा, अतः अहिल्याबाई के चरित्र से ही हमें प्रेरणा मिलती रहेगी।

जिस समय वह गद्दी पर बैठीं, वह 30 वर्ष की नौजवान विधवा थीं। और अपने राज्य के प्रशासन में वह बड़ी खूबी से सफल रहीं। वह स्वयं राज्य का कारोबार देखती थीं। उन्होंने युद्धों को टाला, शांति कायम रखी और अपने राज्य को ऐसे समय में खुशहाल बनाया, जबकि भारत का ज्यादातर हिस्सा उथल-पुथल की हालत में था। इसलिए यह ताज्जुब की बात नहीं कि, आज भी भारत में जन-जन की जबान पर उनके बहादुरी के किस्से हैं।

महारानी अहिल्याबाई वास्तव में न्यायभीरु थीं, भारतवर्ष के इतिहास में यह एक बड़ा प्रयोग था। संपूर्ण भारत के इतिहास में यह एक विचित्र प्रयोग ही कहा जाएगा, कि जो स्त्रियाँ कर्तव्यनिष्ठ होती हैं, वे राज कार्य भी चला सकेंगी, ऐसा उस समय सोचा नहीं जा सकता था। पर मराठों ने एक ऐसा प्रयोग करने की हिम्मत दिखाई, जो अहिल्याबाई के हाथ में राज्य की बागडोर सौंपी। उन्होंने बहुत अच्छी तरह राज्य चलाया। शस्त्रबल से दुनिया को जीतने का प्रयास कइयों ने किया। लेकिन प्रेम और त्याग से जिन्होंने दुनिया को प्रभावित किया, उनमें अहिल्याबाई ही एक ऐसी वीरांगना निकलीं, जिन्होंने भारत के सभी प्रांतों को बुद्धि और प्रेम से जीता। भारत के सम्पूर्ण ज्ञात इतिहास में अहिल्याबाई होल्कर का स्थान अद्वितीय रहेगा।

13 अगस्त 1795 को नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर के किले में भारतीय इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों औरमें लिखाकर सदैव के लिए महानिद्रा में सो गईं।

भारतवर्ष की ऐसी महानायिका को विनम्र श्रद्धांजलि और शत्-शत् नमन....

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

-:समाप्त:-

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
7355175480